Original Paper

ISSN: 2321-1520

'गुफाएँ': दलितों की भीतरी कमजोरियों को उजागर करती कहानी

गिरीश बंजारा

शोधछात्र गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

'कामरेड का बक्सा' युवा कवि, दलित चिंतक एवं कहानीकार सूरज बड़त्या का कहानी संग्रह है । यह सन् २०१३ में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित पाँच दलित कहानियों का संग्रह है । ये पाँच कहानियाँ हैं - कबीरन्, कामरेड का बक्सा, गुज्जी, गुफाएँ एवं फीलगुड । इन पाँचों कहानियों में दलित चिंतन के विभिन्न आयाम और दलित जीवन की समस्याओं को अलग-अलग ढंग से देखा गया है । 'गुफाएँ' इनकी एक महत्त्वपूर्ण कहानी है । इस कहानी में नायक राजन और नायिका अपूर्वा के जीवन संघर्ष की बात बताई गयी है । राजन और अपूर्वा दोनों ही दलित है लेकिन दलितों में भी जातिभेद की समस्या पाई जाती है इस बात को लेखक ने कहानी के द्वारा प्रस्तुत किया है । 'गुफाएँ कहानी का शीर्षक एक संकेत है, प्रतीक है । गुफाएँ यानि गहन अंधकार अर्थात् दलित अभी तक इन अंधकारों से बाहर नहीं आये हैं । ये गुफाएँ एक नहीं अनेक हैं । दलित सदियों से जाति-पाति के भेदभाव की समस्या से पीड़ित हो रहे हैं । इस कहानी में नायक राजन (जाटव) और नायिका अपूर्वा (चमार) है । राजन और अपूर्वा दोनों दलित होते हुए भी उनकी शादी के बीच जाति आड़े आ जाती है क्योंकि दलितों में चमार को जाटवों से ऊँचा माना जाता है । इसलिए चमार अपनी बहन, बेटियों का ब्याह जाटवों के घर नहीं करते हैं । इसी उपजाति भेद की समस्या से राजन की शादी अपूर्वा से नहीं हो पाती । गुजराती दलित साहित्यकार डॉ. हरिश मंगलम् द्वारा संपादित पुस्तक 'अनन्य' में डॉ. गोवर्धन बंजारा ने सूरज बड़त्या की कहानियों पर एक आलोचनात्मक लेख लिखा है । उसमें 'गुफाएँ' कहानी के विषय में ठीक ही लिखते हैं - 'गुफाएँ' दलितों की भीतरी कमजोरियों को उजागर करती एक सशक्त कहानी है । भारतीय समाज में जाति प्रथा की जड़ें इतनी गहरी और जटिल हैं कि उसे समझ पाना और तोड़ना मुश्किल-सा लगता है । एक ओर दलित स्वयं इस कुत्सित, अमानवीय एवं अन्यायपूर्ण जाति-व्यवस्था का शिकार होते आये हैं, वहीं स्वयं दलित भी जाति श्रेष्ठता के दंभ से मुक्त नहीं है । दलितों के आपसी जातिगत अंतर्विरोधों को दूर करने की कथाकार की चिंता देखी जा सकती है - 'देख्यो अपूर्वा ! कहने को तो सभी दलित एक ही हैं लेकिन जो लड़का तुमने पसंद किया है वह जाटव है और हम चमार... । अब अगर हमारी लड़की जाटवों के यहाँ ब्याही जायेगी तो क्या इसमें हमारी नाक नीचे नहीं होगी ।" (१)

'गुफाएँ' कहानी में व्यक्त भारतीय समाज की जटिलता इतनी जटिल है कि इसकी कोई सीमा नहीं है । भारतीय वर्णव्यवस्था को चार भागों में बाँटा गया है । उसमें ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ है बाकी सब उससे नीचे आते हैं । ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं, लेकिन उसमें भी जातिभेद पाये जाते हैं । शूद्र है तो उसमें भी जातिभेद पाये जाते हैं, यानि जातिभेद में भी जाति-भेद यह भारतीय समाज की सबसे बड़ी जटिलता है । समाज की इस जटिलता उपजाति भेद की समस्या को लेखक सूरज बड़त्या ने राजन और अपूर्वा जैसे पात्रों के माध्यम से इस कहानी में प्रस्तुत किया है ।

इस कहानी में अपूर्वा के पिताजी महेश प्रसाद शिक्षित हैं । अपने बच्चों को हमेशा यही कहते हैं कि कभी भी अपमान सहन नहीं करना चाहिए । पूरे भारतीय समाज में जो जातिभेद चल रहा है उसे तोड़कर हमें आम्बेडकर के विचारों को आगे ले जाना चाहिए । उसके लिए चाहे हमें जान देनी पड़े तो भी घबराना नहीं चाहिए । ये सब संस्कार अपूर्वा को उसके पिताजी देते हैं । लेकिन जब हकीकत की बात आती है तब अपूर्वा के पिताजी की कथनी और करनी में अन्तर देखने को मिलता है । जब निर्णायक स्थिति आती है तो वे भी मूल रूप से जातिवाद को बढ़ावा देने लगते हैं । पिताजी कहते हैं कि - "अपूर्वा, अभी हमारा समाज तैयार नहीं है । भले ही हम कितने प्रगतिशील हो जायें.. लेकिन रहना तो हमें अपनी जात में ही है ।" (२) फर्क सिर्फ इतना है कि सवर्ण सिर्फ दलितों के साथ जातिभेद रखते हैं और दलित अपनी ही बिरादरी के लोगों के साथ जातिभेद करते हैं । अर्थात् जातिवाद को बढ़ावा सिर्फ सवर्ण लोग ही नहीं दे रहे दलित लोग भी दे रहे हैं । दलितों में उपजाति भेद की जो समस्या सूरज बड़त्या की कहानी 'गुफाएँ' में देखने को मिलती है वैसी ही जातिभेद की समस्या ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'मैं ब्राह्मण नहीं हूँ' में भी देखी जा सकती है । मोहनलाल शर्मा के लड़के की शादी उन्हीं के मुहल्ले के गुलजारीलाल शर्मा की लड़की सुनीता से तय की जाती है । परंतु जाति को लेकर दोनों के बीच संघर्ष होता है । तब गुलजारीलाल की बेटी सुनीता से रहा नहीं जाता और वह सभी लोगों के बीच अपनी जाति का भेद खोलते हुए पापा से कहती है कि - "पापा, ये लोग ब्राह्मण नहीं हैं तो, क्या आप ब्राह्मण हैं ।"(३) इस प्रकार ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में भी दलितों में उपजाति भेद की समस्या को देखा गया है ।

इस कहानी में भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति की ओर भी संकेत किया गया है । भारतीय समाज में स्त्रियाँ फिर वो चाहे सवर्णों की हो या फिर दलितों की उसकी हालत बहुत ही गंभीर, दयनीय और सोचनीय है । स्त्रियों को अपने जीवन के निर्णय लेने की शक्ति भी उसके पास नहीं है । पुरुष विचारधारा उसके ऊपर हावी है । चाहे फिर वह स्त्री सवर्ण समाज की हो या फिर दलित समाज की । उसे अपनी जिन्दगी के महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं है । जब वह छोटी होती है तब तो स्वाभाविक है कि उसके माँ-बाप ही उसके जीवन के विषय में निर्णय लेते हैं, लेकिन जब वह पुख्त हो जाती है, समझदार हो जाती है, उसके बावजूद भी उसे उसके जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार उसके पास नहीं होता । वह स्वतंत्र नहीं होती । उसकी इच्छा और अनिच्छा की कदर न तो सवर्ण समाज करता है और न ही दलित समाज । यानी स्त्री दलित हो या सवर्ण कोई फर्क नहीं पड़ता । स्त्री, स्त्री ही रहती है । उसकी वेदना उसके पास ही रहती है । इस समस्या को लेखक ने अपूर्वा के माध्यम से बताया है । अपूर्वा कहती है कि - "इंसान अपने भविष्य का फैसला खुद क्यों नहीं कर सकता....?" (४)

पुरुष बहुत ही दंभी और मक्कार हुआ करता है इसकी ओर लेखक ने संकेत किया है । अगर पुरुष किसी और के साथ संबंध रखता है तो उसकी भनक तक उसकी पत्नी को नहीं लगने देता और अगर उसकी पत्नी को मालूम भी हो जाये तो वह उसे अपने अहम के रूप में लेता है । वह बताता है कि वह कितना लोकप्रिय है सबके लिए । वह अपनी सच्चाई नहीं बताता । लेकिन अगर पत्नी से एक छोटी-सी भी भूल हो जाए तो वह उसके साथ बदसलूकी करता है । उसे शंका की नज़र से देखता है । यह पुरुषों का दंभ है । इस कहानी में भी अमन अपनी पत्नी अपूर्वा को शादी के पहले के उसके प्रेम संबंध के बारे में बताता है । वह बताता है कि शादी के पहले वह एक लड़की से प्रेम करता था लेकिन किसी कारण से उसकी शादी उस लड़की से नहीं हो पाई । यह सब जानकर भी अपूर्वा कुछ नहीं कहती है, लेकिन अमन के द्वारा पूछने पर जब अपूर्वा राजन के बारे में बताती है तो उसे अच्छा नहीं लगता और कुछ समय के बाद वह अपूर्वा के साथ संबंध तोड़ देता है । पुरुष की यह मानसिकता इस कहानी में देखी जा सकती है ।

इस कहानी में स्त्री का कल्याण उसकी आत्मनिर्भरता है इस बात की ओर संकत किया गया है । इस कहानी

के माध्यम से यह बताया गया है कि स्त्री के पास अगर नौकरी है, वह आत्मनिर्भर है तो वह अपने सपनों को खुद पूरा कर सकती है । वह अपनी जिन्दगी के महत्त्वपूर्ण निर्णय खुद ले सकती है । वह अपना जीवन किसके साथ जीना चाहती है, उसके लिए वह स्वतंत्र है । इस कहानी में भी अपूर्वा के पास नौकरी है इसलिए अपने पति अमन के द्वारा छोड़ देने पर वह निराश नहीं होती है । वह अपने सपने खुद पूरा करना चाहती है और उन सपनों को पूरा करने के लिए न तो उसे उसके पिताजी की जरूरत है और न ही मामाजी की । इसलिए वह अंत में अपने प्रेमी राजन के पास चली जाती है ।

निष्कर्षः 'गुफाएँ' कहानी में दलित समुदाय के अपने अन्तर्विरोधों और उपजातियों की आन्तरिक समस्याओं, भारतीय समाज की जटिलताओं, स्त्रियों की समस्याओं, दंभी पुरूषों के अहम और स्त्री आत्मनिर्भरता को देखा जा सकता है । इस कहानी में जातिवाद के लिए केवल तथाकथित सवर्ण जातियों पर ही इल्जाम नहीं लगा सकते, बल्कि इसके लिए दलित समुदाय को भी आत्मसंघर्ष करना होगा ।

संदर्भ

(१) 'अनन्य' डॉ. हरिश मंगलम्, पृ.१७६

(२) 'कामरेड का बक्सा', सूरज बड़त्या, पृ.८३

(३) 'घुसपैठिए' ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.४१

(४) 'कामरेड का बक्सा', सूरज बड़त्या, पृ.८१

❑